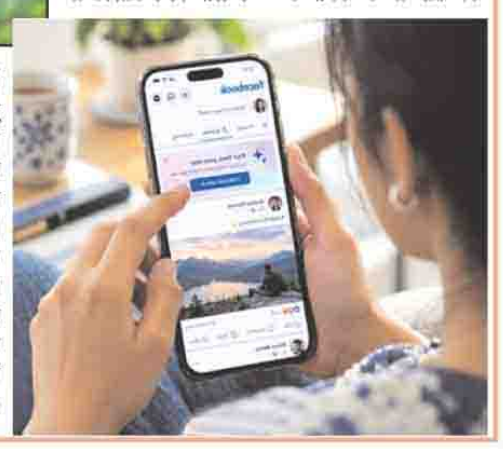
बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा के लिए बढ़ायी सख्ती

सोशल मीडिया कंपनी मेटा अब बच्चों और टीनेजर्स की सुरक्षा के लिए एक नया एआई सिस्टम दुनियाभर में लागू करने जा रही है। इस सिस्टम की मदद से इंस्टाग्राम-फेसबुक एप खुद पहचान लेंगे कि यूजर टीनेजर है या नहीं। इसके बाद, उसका अकाउंट अपने

अगर किसी टीनेजर ने अकाउंट बनाते समय अपनी उम्र गलत बतायी होगी, तो भी एआई उनके इस्तेमाल करने के तरीके से असली उम्र पहचान लेगा। उम्र का पता चलते ही अकाउंट अपने-आप टीन सेटिंग्स में बदल जायेगा, जिससे उनकी स्क्रीन पर खराब या आपत्तिजनक वीडियो/पोस्ट दिखना बंद हो जायेंगे।



आप सख्त सुरक्षा और प्राइवेसी वाले टीन अकाउंट में बदल जाएगा। दुनियाभर की सरकारों की ओर से बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा पर बढ़ाई जा रही सख्ती को देखते हुए कंपनी ने यह कदम उठाया है। मेटा ने अपने आधिकारिक ब्लॉग पोस्ट में बताया कि वह अप्रैल 2025 से एक नई एआई तकनीक की टेस्टिंग कर रहा है- अगर किसी टीनेजर ने अकाउंट बनाते समय अपनी उम्र गलत बताई होगी, तो भी एआई उनके इस्तेमाल करने के तरीके से असली उम्र पहचान लेगा। उम्र का पता चलते ही अकाउंट अपने-आप टीन सेटिंग्स में बदल जाएगा, जिससे उनकी स्क्रीन पर खराब या आपत्तिजनक वीडियो/पोस्ट दिखना बंद हो जाएंगे। पेरेंट्स को यह समझाने के लिए कि यह सुरक्षा सिस्टम कैसे काम करता है, मेटा खास जानकारी देने वाले वीडियो भी जारी करेगा। मेटा पर पिछले कुछ महीनों में बच्चों की सुरक्षा से खिलवाड़ और एप की लत लगाने के गंभीर आरोप लगे थे। मेटा पर आरोप था कि फेसबुक और इंस्टाग्राम से बच्चों और टीनेजर्स के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है और कंपनी ने इस नुकसान को लोगों से छुपाया। मेटा पर बच्चों का पर्सनल डेटा जुटाकर एआई मॉडल्स को ट्रेन करने का आरोप भी है। न्यू मेक्सिको कोर्ट ने बच्चों को सुरक्षा का झूठा भरोसा देने पर कंपनी पर करीब 8,000 करोड़ (950 मिलियन) का जुर्माना लगाया। वहीं, प्लेटफॉर्म की लत से जुड़े एक अन्य मामले में मेटा को अमेरिका के 15.9 बिलियन डॉलर यानी करीब 1.49 लाख करोड़ रुपए का एक कानूनी समझौता करना पड़ा, जिसके बाद कंपनी को ये सख्त कदम उठाने पड़े। कानूनी समझौते के बाद मेटा अपने एप में कई नए सुरक्षा फीचर्स ला रहा है। अब टीनेजर्स के लिए रोजाना एप इस्तेमाल करने की टाइम लिमिट तय होगी और रात में नोटिफिकेशन बंद रखने के लिए शांत मोड भी मिलेगा। साथ ही, अनजान लोगों से बातचीत रोकने के लिए सख्त प्राइवेसी नियम लागू किए जाएंगे। मेटा ने टिकटॉक, स्नैपचैट और यूट्यूब से भी इन सेफ्टी नियमों को लागू करने की अपील की है। टीनेजर्स के लिए नियमों को कड़ा करने की यह पहल ऐसे समय में हो रही है जब कई देश सख्त कदम उठा रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया ने 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया है। मेटा के अनुसार, ये सभी नए फीचर्स और वैश्विक एआई एज वेरिफिकेशन प्रक्रिया जनवरी से आधिकारिक रूप से लागू होने शुरू हो जाएंगे। एप्स का डिजाइन इस तरह तैयार किया गया था कि बच्चे नोटिफिकेशन, ऑटो-प्ले और लाइक बटन के चक्र में उलझे रहें। इससे उनके दिमाग में डोपामाइन का स्तर प्रभावित होता है, जिससे स्क्रीन टाइम पर नियंत्रण खो जाता है और उन्हें सोशल मीडिया की लत लग जाती है। इंस्टाग्राम पर दिखने वाले फिल्टर और परफेक्ट जीवन की तस्वीरें बच्चों में अपने शरीर की तुलना दूसरों से करने की आदत पैदा करती हैं। मेटा के खुद के आंतरिक रिसर्च में पाया गया था कि इंस्टाग्राम कई टीनेजर्स में अपने शरीर और रंग-रूप को लेकर असंतोष बढ़ाता है। देर रात तक एप्स के इस्तेमाल (नाइट स्क्रॉलिंग) से बच्चों का स्लीप साइकिल पूरी तरह बिगड़ जाता है। नींद की यह पुरानी कमी आगे चलकर गहरी चिंता, डिप्रेशन और पढ़ाई में एकाग्रता की कमी का कारण बनती है। सोशल मीडिया पर लगातार दूसरों से खुद की तुलना करने से बच्चों में फोमो यानी पीछे छूट जाने का डर पैदा होता है। इसके साथ ही साइबर बुलिंग और ट्रॉलिंग से बच्चों के आत्म-सम्मान को गंभीर चोट पहुंचती है। उम्र की जांच का सख्त तंत्र न होने के कारण बच्चे अपनी उम्र से बड़े, मानसिक रूप से संवेदनशील या परेशान करने वाले कंटेंट के संपर्क में आ जाते थे।







रामललाके नामपर लॉन्च हुई बेहद लग्जरी घड़ी



स्विट्जरलैंड की जानी-मानी प्रीमियम वॉच कंपनी फ्रैंक मुलर ने एक बेहद खास और अनोखी घड़ी बाजार में उतारी है। कंपनी ने इसे अपनी वैनगार्ड सीरीज के तहत राम लला लिमिटेड एडिशन नाम दिया है। इस लग्जरी घड़ी की कीमत 31.25 लाख रुपये रखी गई है और इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह सीधे तौर पर अयोध्या के राम मंदिर में विराजमान भगवान राम के बाल स्वरूप को समर्पित है। इस महंगी टाइमपीस का मुख्य आकर्षण इसका अद्भुत 3डी डायल है। इस डायल के ठीक बीच में रामलला की बहुत ही बारीक और सुंदर आकृति उकेरी गई है। कंपनी के अनुसार, इस खास डिजाइन को बनाने में एडवांस लेजर तकनीक का सहारा लिया गया है। इस बारीकी को निखारने और डायल को पूरी तरह तैयार करने में कारीगरों को पूरे 30 घंटे का समय लगा। घड़ी के डायल के साथ-साथ इसकी बाहरी बनावट भी पूरी तरह से राजसी है। इसका केस 18 कैरेट रोज गोल्ड के एक ठोस ब्लॉक से तराश कर बनाया गया है। अगर इसके साइज की बात करें, तो इस केस की चौड़ाई 41 मिलीमीटर और लंबाई 49.95 मिलीमीटर है। यह परफेक्ट साइज और सोने की चमक इसे कलाई पर एक बेहद प्रीमियम और आकर्षक लुक देती है। चूंकि यह एक लिमिटेड एडिशन सीरीज है, इसलिए कंपनी ने इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन नहीं किया है। फ्रैंक मुलर ने इस रामलला मॉडल की पूरी दुनिया के लिए केवल 108 घड़ियां ही बनाई हैं। यानी विश्वभर में केवल 108 लोग ही ऐसे होंगे जिनके पास यह खास घड़ी खरीदने और पहनने का मौका होगा।

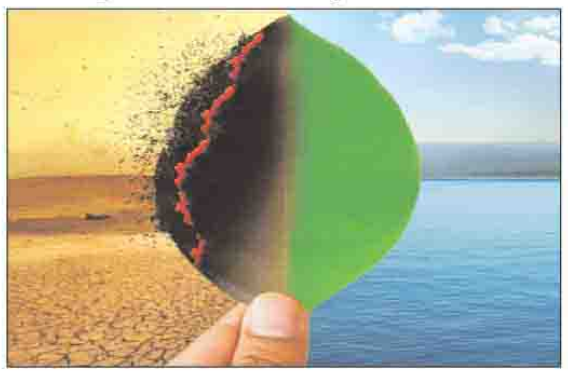
पारंपरिक व्यंजनोंके बिना अधूरा है बिहार का छठ महापर्व



बिहार का महापर्व कहलाने वाला छठ सिर्फ एक त्योहार नहीं है, बल्कि लाखों लोगों की भावना है। बिहार के साथ-साथ पूर्वी उत्तर-प्रदेश और झारखंड में भी छठ पूजा बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। चार दिनों के इस पर्व में साफ-सफाई और नियमों का बहुत खास ध्यान रखा जाता है। इस पर्व की शुरुआत होती है नहाय-खाय से, जिसमें लौकी की सब्जी और चावल बनाया जाता है। इसी तरह इस पर्व से और भी कुछ खास डिशेज जुड़ी हैं, जिनके बिना ये त्योहार अधूरा माना जाता है। छठ पूजा के पहले दिन यानी नहाय-खाय के दिन लौकी और चने की दाल मिलाकर सब्जी बनाई जाती है। इस सब्जी को बहुत ही शुद्धता के साथ बनाया जाता है। बिना लहसुन-प्याज के, शुद्ध घी और सेंधा नमक में लौकी की सब्जी बनाई जाती है, जिसे अरवा चावल के साथ बनाया जाता है। अरवा चावल कच्चे चावल को कहते हैं, जिसे पतीले में पकाया जाता है। व्रती इस दिन लौकी की सब्जी और चावल ही खाती है। छठ के दूसरे दिन खरना होता है, जिसमें गुड़ की खीर और रोटी बनाई जाती है। नए चावल, दूध और गुड़ को पकाया जाता है। इसमें चीनी का इस्तेमाल नहीं किया जाता। पारंपरिक रूप से इसे मिट्टी के चूल्हे पर बनाया जाता है। खरना को व्रती पूरे दिन उपवास करती है और शाम को गुड़ की खीर के साथ रोटी खाती है, जिसके बाद 36 घंटों का निर्जला उपवास शुरू होता है। छठ पूजा के प्रसाद में ठेकुआ की खास जगह होती है। इसके बिना छठ महापर्व का प्रसाद अधूरा है।

मौसमका बदलता मिजाज चिंता का विषय

जलवायु परिवर्तन से निपटने में विज्ञान की भूमिका निर्णायक है। मौसम पूर्वानुमान, उपग्रह आधारित निगरानी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु माडलिंग और आपदा पूर्व चेतावनी प्रणालियों से



जोखिम कम किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, अत्यधिक वर्षा या चक्रवात की आशंका का पहले पता चलने पर प्रशासन लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाकर जान-माल का नुकसान कम हो सकता है। इसी तरह कार्बन कैप्चर, ग्रीन हाइड्रोजन, उन्नत बैटरी और ऊर्जा दक्षता से जुड़ी तकनीकें उत्सर्जन घटाने में मददगार हो सकती हैं। हालांकि इनका लाभ तभी मिलेगा जब ये सस्ती, सुलभ और पर्यावरण के अनुकूल हों। जलवायु परिवर्तन का असर तेजी से बढ़ते शहरों में भी दिखाई दे रहा है। कंक्रीट के बढ़ते निर्माण, घटते हरित क्षेत्र, वाहनों का धुआं और ऊर्जा की अधिक खपत शहरों का तापमान बढ़ा रहे हैं। इससे निपटने के लिए पौधारोपण, हरित क्षेत्र का विस्तार, तालाबों और जलाशयों का संरक्षण, वर्षा जल संचयन, ऊर्जा दक्ष भवनों और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना जरूरी है। बढ़ती गर्मी के कारण एयर कंडीशनर की मांग बढ़ रही है, लेकिन पारंपरिक शीतलन उपकरण बिजली की खपत के साथ कुछ मामलों में शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी बढ़ाते हैं। इसलिए प्राकृतिक वेंटिलेशन, छतों पर हरियाली, ऊर्जा दक्ष उपकरणों और पर्यावरण अनुकूल शीतलन तकनीकों को बढ़ावा देना होगा। जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध लड़ाई में जलवायु अनुकूल शहरों और टिकाऊ भवनों के विकास के साथ प्रकृति आधारित समाधानों को भी प्राथमिकता देनी होगी, क्योंकि वायु प्रदूषण का दायरा निरंतर बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन से निपटने की जिम्मेदारी केवल सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की नहीं, आम नागरिकों की भी है। बिजली-पानी की बचत, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, प्लास्टिक का कम इस्तेमाल, कचरे का पृथक्करण और पेड़-पौधों का संरक्षण जैसे कदम बड़ा बदलाव ला सकते हैं। जरूरत से ज्यादा वस्तुओं का उपयोग, खाद्य पदार्थों की बर्बादी और ऊर्जा की अनावश्यक खपत भी पर्यावरण पर दबाव बढ़ाती है। इसलिए जलवायु अनुकूल जीवनशैली को सामाजिक आंदोलन बनाने की जरूरत है। धरती के पास संसाधन सीमित हैं, लेकिन मानव की आवश्यकताएं और आकांक्षाएं लगातार बढ़ रही हैं। अब जरूरत इसकी है कि विकास का रास्ता प्रकृति के विनाश से होकर न गुजरे।

चमत्कार

प्रकृति ने इस धरती पर कई ऐसे अनूठे जीव और रहस्य बनाए हैं, जिन्हें देखकर आज भी इंसान दांतों तले उंगली दबा लेता है। इनमें से एक सबसे बड़ा आश्चर्य प्रवासी पक्षियों का सफर है। ये पक्षी हजारों किलोमीटर की लंबी उड़ान भरकर एक देश से दूसरे देश पहुंचते हैं, सर्दियों में गर्म इलाकों में आते हैं और मौसम बदलते ही वापस अपने पुराने घोंसले में लौट आते हैं। हैरानी की बात तो यह है कि महीनों भटकने और आसमान की असीम ऊंचाइयों में उड़ने के बाद भी ये पक्षी कभी अपना रास्ता नहीं भूलते और ठीक उसी पेड़ की, उसी डाली के उसी पुराने घोंसले पर आकर बैठ जाते हैं. मटर के दाने जितने छोटे दिमाग वाले इन पक्षियों के पास कोई जीपीएस या एडवांस मैप नहीं होता, फिर यह चमत्कार कैसे मुमकिन हो पाता है? सालों तक वैज्ञानिक इस बात से हैरान थे, लेकिन हाल के वर्षों में क्वांटम फिजिक्स और नैनोटेक्नोलॉजी के विकास ने इस गुत्थी को सुलझा लिया है.पक्षियों की आंखों में एक खास तरह का प्रोटीन पाया जाता है, जिसे 'क्रोमो प्रोटीन' कहा जाता है।'क्रोमो' शब्द का संबंध रंगों से होता है। जब सूरज की रोशनी इन पक्षियों पर पड़ती है, तो उसमें मौजूद स्पेक्ट्रम (विबग्योर) की ब्लू (नीली) साइड वाली वेवलेंथ इस क्रोमो प्रोटीन पर स्ट्राइक करती है. इसके प्रभाव से प्रोटीन के अंदर मौजूद इलेक्ट्रॉन्स में वाइब्रेशन और शिफ्टिंग होती है. सबसे दिलचस्प बात यह है कि इसके बावजूद दोनों इलेक्ट्रॉन्स आपस में क्वांटम एंटेंगलमेंट की स्थिति में जुड़े रहते हैं. इस क्वांटम प्रक्रिया के जरिए पक्षी के दिमाग को सिग्नल मिलता है, जिससे उसे आसमान में पृथ्वी की अदृश्य मैग्नेटिक लाइंस दिखाई देने लग जाती हैं. ठीक वैसे ही जैसे नेविगेशन सिस्टम में लेटीट्यूड और लोंगिट्यूड की रेखाएं दिखती हैं।



सोते समय भी काम करता है इंसानी दिमाग



दिनभर काम करने के बाद जब हम रात में बिस्तर पर जाते हैं तो धीरे-धीरे शरीर आराम की स्थिति में पहुंचने लगता है. आंखें बंद होती हैं, आसपास की आवाजों पर ध्यान कम होने लगता है और हम नींद की दुनिया में चले जाते हैं। आमतौर पर लोगों को लगता है कि सोने के बाद शरीर के साथ-साथ दिमाग भी काम करना बंद कर देता है. लेकिन असल में ऐसा बिल्कुल नहीं होता.जब हम सो रहे होते हैं, तब भी हमारा दिमाग कई जरूरी कामों में व्यस्त रहता है। वह दिनभर की जानकारियों को व्यवस्थित करता है, यादों को मजबूत बनाने में मदद करता है और शरीर की रिकवरी से जुड़ी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है. यही वजह है कि अच्छी नींद केवल थकान दूर करने के लिए नहीं, बल्कि दिमाग को स्वस्थ रखने के लिए भी जरूरी होती है। कई रिसर्च में बताया गया है कि नींद के दौरान इंसानी दिमाग पूरी तरह बंद नहीं होता। इसकी गतिविधियां जागने के समय से अलग जरूर हो जाती हैं, लेकिन दिमाग लगातार एक्टिव रहता है। नींद के दौरान दिमाग अलग-अलग चरणों से गुजरता है. इस दौरान ब्रेनवेव्स, सांस लेने की गति, दिल की धड़कन और शरीर के तापमान में बदलाव आते हैं. ये सभी प्रक्रियाएं शरीर को आराम देने और अगले दिन के लिए तैयार करने में मदद करती हैं। वैज्ञानिकों ने नींद को मुख्य रूप से दो हिस्सों में बांटा है। पहला नॉन-रैपिड आई मूवमेंट और दूसरा रैपिड आई मूवमेंट स्लीप. में तीन चरण होते हैं. पहले चरण में व्यक्ति जागने और सोने के बीच की स्थिति में रहता है। दूसरे चरण में नींद थोड़ी गहरी होने लगती है और दिल की धड़कन धीमी हो जाती है। तीसरे चरण को गहरी नींद कहा जाता है। इस दौरान शरीर की मरम्मत और मांसपेशियों की रिकवरी जैसी प्रक्रियाएं होती हैं। रेम स्लीप में दिमाग काफी एक्टिव हो जाता है। आंखें बंद होने के बावजूद तेजी से घूमती हैं और आमतौर पर इसी दौरान सबसे जीवंत सपने आते हैं। शरीर की मांसपेशियां अस्थायी रूप से इनएक्टिव रहती हैं, ताकि व्यक्ति सपनों में होने वाली गतिविधियों को वास्तव में करने न लगे।

५० प्रतिशत लोगों को पता ही नहीं कि उन्हें डायबिटीज है





आज के समय में लगभग हर घर में डायबिटीज का कम से कम एक मरीज मौजूद है। चिंता की बात ये है कि अब सिर्फ बुजुर्ग ही नहीं, बल्कि 20 से 30 साल की उम्र के युवा भी इसकी चपेट में आ रहे हैं। कई लोगों को लंबे समय तक पता ही नहीं चलता कि उन्हें डायबिटीज है। एंडोक्राइनोलॉजी एवं मेटाबॉलिज्म विभाग के प्रमुख डॉ. से बातचीत में बताया कि मधुमेह से पीड़ित लगभग 50 प्रतिशत लोगों की पहचान तब तक नहीं हो पाती, जब तक वे अपनी जांच नहीं कराते. इसलिए डायबिटीज से बचने के लिए खानपान से जुड़ी इन 7 जरूरी बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। सिर्फ चीनी खाना बंद करना काफी नहीं- डायबिटीज से बचने के लिए सिर्फ चीनी, मिठाई और चॉकलेट छोड़ना पर्याप्त नहीं है खाने में तेल, रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट और दूसरी चीजों की मात्रा पर भी ध्यान देना चाहिए. संतुलित डाइट लेना जरूरी है। एक बार में बहुत ज्यादा खाना न खाएं- दिन में सिर्फ दो बार भरपेट या बहुत ज्यादा खाना सही आदत नहीं है। भोजन की मात्रा के साथ यह भी जरूरी है कि आप कितनी बार और कितने अंतराल पर खाना खाते हैं। खाने में फाइबर वाली चीजें शामिल करें- चावल या रोटी खाते समय उनके साथ हरी सब्जियां, सलाद और दूसरी फाइबर वाली चीजें जरूर लें. इससे भोजन का पोषण बेहतर होता है और ब्लड शुगर को कंट्रोल रखने में मदद मिल सकती है। फलों का जूस पीने के बजाय साबुत फल खाएं- डायबिटीज के मरीज आम, केला और अंगूर जैसे फल भी सीमित मात्रा में खा सकते हैं। फलों का जूस पीने के बजाय साबुत फल खाना बेहतर है, क्योंकि इसमें फाइबर मौजूद रहता है, जो शुगर के अवशोषण की गति को धीमा करता है। गुड़ और शहद को चीनी का सुरक्षित विकल्प न समझें- कई लोग चीनी की जगह गुड़ और शहद का इस्तेमाल करने लगते हैं लेकिन ये भी शरीर में शुगर की मात्रा बढ़ा सकते हैं। इसलिए इन्हें भी सीमित मात्रा में ही खाना चाहिए.पैकेट वाले खाद्य पदार्थों के लेबल पढ़ें- बाजार में मिलने वाले पैकेटबंद खाद्य पदार्थों में कई बार छिपी हुई चीनी होती है। इसलिए कुछ भी खरीदने से पहले उसके पैकेट पर लिखी सामग्री और पोषण संबंधी जानकारी जरूर पढ़ें.शारीरिक गतिविधियों पर भी ध्यान दें- डायबिटीज से बचने के लिए सिर्फ डाइट सुधारना काफी नहीं है। लंबे समय तक बैठकर काम करने से बचें और रोजाना टहलने या एक्सरसाइज के लिए समय निकालें. सप्ताह में कम से कम 150 मिनट मध्यम स्तर की शारीरिक गतिविधि करें। इसके साथ तनाव कम रखें और पर्याप्त नींद लें।

करीना कपूर का नवाबी स्टाइल

सोचिए, आप अपने सिर पर इतिहास का एक ऐसा हिस्सा पहने हुए हैं, जो एक शाही परिवार की कई पीढ़ियों से होता हुआ आया है। आपकी अपनी शादी में भी नजर आ चुका है। इस दिवाली करीना कपूर ने बिल्कुल ऐसा ही किया। बेज कलर की ड्रेस में बेबो ने इस साल दीवाली को नवाबी स्टाइल में रोशन किया। बेबो की सोशल मीडिया पर कुछ तस्वीरें वायरल हो रही हैं जिसमें उनकी पगड़ी ने सबका ध्यान खींचा। इस पर सजी 200 साल पुरानी कलगी बेहद आकर्षक लग रही थी। कभी भोपाल के नवाब द्वारा पहनी गई और बाद में सैफ अली खान की शादी में इस्तेमाल की गई यह बेशकीमती विरासत अपने आप में एक दिलचस्प कहानी समेटे हुए है। बेबो ने एक बार फिर इसे सबके सामने चर्चा का विषय बना दिया। सेलिब्रिटी स्टाइलिस्ट रिया कपूर द्वारा स्टाइल की गईं करीना ने पारंपरिक साड़ी या लहंगे के बजाय डिजाइनर पुनीत बलाना का बेज रंग का काफ्तान चुना। इस पोशाक पर असली चांदी का बारीक काम किया गया था, जिसने इसके सादे बेस को एक खूबसूरत चमक दी। वी नेकलाइन और सामने की तरफ हल्की प्लीट्स ने इस कफ्तान को एक अच्छी बनावट दी, जबकि इसका ढीला-ढाला और लहराता हुआ स्टाइल इसके फेस्टिव लुक में एक सहज खूबसूरती ले आया। दीवाली के दौरान आमतौर पर दिखने वाले भारी-भरकम कपड़ों के मुकाबले, यह एक बहुत ही बढ़िया और नया बदलाव था। करीना ने अपने काफ्तान के साथ उसी रंग की बेज (हल्के भूरे) रंग की पगड़ी पहनी, जिससे उनके पूरे पहनावे को एक शाही लुक मिला। पगड़ी के बीचों-बीच एक चमकती हुई पुरानी कलगी लगी थी जोकि करीब 200 साल पुरानी परंपरा का हिस्सा है। इसे कभी भोपाल के अंतिम शासक नवाब, नवाब हमीदुल्लाह खान पहना करते थे। बाद में यह परिवार की एक अनमोल विरासत बन गई।

